जियोटेक्साइल से बचेगा पहाड़ी मंदिर

रिपोर्ट सौंपी

रांची | वरीय संवाददाता

पहाड़ी मंदिर के संबंध में सोसाइटी ऑफ जियो साइंटिस्ट झारखंड की ओर से बुधवार को डीसी राय महिमापत रे को रिपोर्ट सौंपी गई।

रिपोर्ट के अनुसार मिट्टी कटाव को रोकने और ढाल की स्थितिकरण के लिए आधुनिक तकनीक जियोटेक्साइल अपनाना होगा। जिसमें तेजी से बढ़ने वाले पौधे और घास लगाए जाते हैं। इससे पानी से होने वाले बहाव को कम किया जा सकता है। वहीं मंदिर में चढ़ाए जाने वाले पवित्र पानी को उचित नाले के जरिए नीचे लाकर फिल्टर करके फिर से इस्तेमाल में लाया जा सकता है। इसके लिए अलग-अलग ऊंचाई पर

में मिलाना होगा।

उत्तर-पूर्व के ढलान में तेजी से बढ़ने वाले घास, झाड़ी व पौधे लगाने का काम फौरन शुरू करना होगा। रांची पहाड़ी के पत्थरों की गुणवत्ता को ध्यान में रखते हुए यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि पहाड़ी पर कोई भी बड़ा निर्माण कार्य करना ठीक नहीं है। मंदिर या इसके आसपास के क्षेत्रों में किसी भी कार्य को करने के लिए विस्तृत भू-तकनीकी अध्ययन जरूरी है। सोसाइटी कि डीसी ने कहा है कि इस संबंध में जब कार्य शुरू होगा तो आपलोगों से संपर्क करेंगे। रिपोर्ट सौंपने के दौरान सोसाइटी के अध्यक्ष एभी सहाय, उपाध्यक्ष एसएन सिन्हा, प्रो उदय कुमार आदि मौजूद थे।

टूटे हुए पत्थरों को जाली से बांधना होगाः सोसाइटी की नौ सदस्यीय टीम ने 26 जुलाई को पहाड़ी मंदिर के विभिन्न हिस्सों का बारीकी से मुआयना किया था। इसके बाद रिपोर्ट तैयार की गई। डीसी को सौंपे रिपोर्ट में 2004 से लेकर अब तक के पहाड़ी मंदिर का गूगल मैप के जरिए भी पहाड़ी की स्थिति को दर्शाया गया। रिपोर्ट में कहा गया कि प्रस्तावित नए मंदिर परिसर और अस्थिर ढाल में पत्थरों को नुकसान से बचाने के लिए सिविल इंजीनियरिंग के तरीकों का इस्तेमाल करना चाहिए। टूटे हुए पत्थरों के टुकड़ों को तार के जाली के द्वारा स्थिर

भू वैज्ञानिकों ने उपायुक्त को सौंपा जांच रिपोर्ट, दिये कई सुझाव

रांची पहाड़ी के पत्थरों की हालत खराब यहां किसी तरह का बड़ा निर्माण न करें

संवाददाता ▷ रांची

- कुछ दिन पहले ही भू वैज्ञानिकों के नौ सदस्यीय दल ने किया था रांची पहाड़ी का दौरा
- पहाड़ी पर हो रहे भू-स्खलन व मंदिर में दरारें पड़ने के कारणों की जांच की थी

उपायुक्त को जांच रिपोर्ट सौंपते सोसाइटी ऑफ जियो साइंटिस्ट के सदस्य.

सोसाइटी ऑफ जियो साइंटिस्ट के नौ सदस्यीय प्रतिनिधिमंडल ने बुधवार को पहाड़ी मंदिर के संरक्षण के लिए तैयार की गयी जांच रिपोर्ट उपायुक्त राय महिमापत रे को सौंपी. जियो साइंटिस्ट के इस दल ने कुछ दिन पहले ही पहाड़ी पर हो रहे भू-स्खलन और पहाड़ी मंदिर में आ रही दरारों की जांच की थी.

भू विज्ञानियों ने अपनी जांच रिपोर्ट में कहा है कि पहाड़ी के पत्थरों का प्रकार और उनकी गुणवत्ता की स्थिति काफी खराब है. इसलिए इस पहाड़ी पर किसी प्रकार का बड़ा निर्माण कार्य नहीं कराया जाये. साथ ही पहाड़ी के पुराने गार्डवाल/रिटेनिंग वॉल को मजबूत किया जाये, ताकि ऊपर में किये गये निर्माण सुरक्षित बने रह सकें. इसके अलावा उत्तर और उत्तर-पूर्व के ढलान में तेजी से बढ़ने वाली घास व झाड़ियां लगायी जायें. उपायुक्त को जांच रिपोर्ट सौंपने वाले प्रतिनिधिमंडल में प्रो उदय सहाय, एसएन सिन्हा, डॉ अनल सिन्हा और विभाष तिर्की आदि शामिल थे.

मंदिर के आसपास में निर्माण के लिए हो भू तकनीकी अध्ययन : भू वैज्ञानिकों ने अपनी रिपोर्ट में यह सलाह भी दी है कि अगर पहाड़ी मंदिर और उसके आसपास किसी प्रकार का सिविल कार्य करना जरूरी हो, तो उससे पहले विस्तृत भू तकनीकी अध्ययन करा लिया जाये. इसके अलावा टूटे हुए पत्थरों के टुकड़े को रोकने के लिए सिविल इंजीनियरिंग कार्य किये जाने की जरूरत है.

जलाभिषेक से निकलने वाले जल की निकासी के लिए रास्ता बने : वैज्ञानिकों ने यह सलाह भी दी है कि पहाड़ी मंदिर में श्रद्धालु शिवलिंग पर जो जल चढ़ाते हैं, उसकी निकासी के लिए समुचित व्यवस्था की जानी चाहिए. इसके अलावा पहाड़ी में अलग-अलग ऊंचाई पर नाली का निर्माण कराया जाये. फिर नीचे लाकर सभी को एक नाले में जोड़ दिया जाये.

पहाड़ी पर लगे फ्लैग पर कुछ भी कहने से बचते रहे भू वैज्ञानिक : उपायुक्त को जांच रिपोर्ट सौंपने वाले भू वैज्ञानिकों से पूछा गया कि क्या पहाड़ी के चोटी पर लगाये गये फ्लैग पोस्ट के कारण पहाड़ी की यह हालत हो रही है? साथ ही यह कि क्या इस फ्लैग पोस्ट को यहां से हटा दिया जाना चाहिए? इस पर उनका कहना था कि इसके लिए विस्तृत सर्वे की जरूरत है. उस पर हम कुछ नहीं कह सकते हैं.

जियो साइंटिस्ट ने डीसी को सौंपी रिपोर्ट, कहा- पहाड़ी मंदिर में बड़ा निर्माण करना उचित नहीं

नौ सदस्यीय टीम ने 26 जुलाई को पहाड़ी के विभिन्न हिस्सों का किया था मुआयना

चढ़ाया जानेवाला जल उपयोग में ला सकते हैं

सिटी रिपोर्टर | रांची

रांची पहाड़ी के पत्थरों की गुणवक्ता को देखते हुए वहां कोई भी बड़ा निर्माण करना उचित नहीं होगा। मंदिर या इसके आसपास के क्षेत्रों में कोई भी काम करने के लिए विस्तृत भू-तकनीकी अध्ययन जरूरी है। ये बातें सोसाइटी ऑफ जियो साइंटिस्ट झारखंड की टीम ने बुधवार को डीसी राय महिमापत रे को सौंपी अपनी रिपोर्ट में कहीं हैं।

सोसाइटी के महासचिव डॉ. अनल सिन्हा ने बताया कि डीसी ने कहा है कि जब काम शुरू होगा तो जियो साइंटिस्टों से संपर्क किया जाएगा। रिपोर्ट सौंपने के दौरान सोसाइटी के अध्यक्ष एवी सहाय, उपाध्यक्ष एसएन सिन्हा, प्रो. उदय कुमार मौजूद थे।

पहाड़ी की स्थिति पर डीसी को रिपोर्ट सौंपती जियो साइंटिस्ट झारखंड की टीम।

2004 से लेकर अब तक गूगल मैप को भी रिपोर्ट में दर्शाया : सोसाइटी की नौ सदस्यीय टीम ने 26 जुलाई को पहाड़ी मंदिर के विभिन्न हिस्सों का मुआयना किया था। इसके बाद रिपोर्ट तैयार की गई है। डीसी को सौंपी रिपोर्ट में 2004 से लेकर अब तक के गूगल मैप के जरिए भी पहाड़ी की स्थिति को दर्शाया गया है।

मिट्टी का कटाव रोकने के उपाय भी बताए : रिपोर्ट के अनुसार मिट्टी का कटाव रोकने और ढाल को स्थिर करने के लिए आधुनिक जियोटेक्साटाइल तकनीक, जिसमें तेजी से बढ़नेवाले पौधे और घास शामिल हैं, उसे अपनाने की बात कही है। इससे पानी की धार से मिट्टी के बहाव को रोका जा सकता है।

सोसाइटी ऑफ जियो साइंटिस्ट ने रांची पहाड़ी पर उपायुक्त को सौंपी भू-वैज्ञानिक रिपोर्ट

पहाड़ी को बचाने के लिए फ्लैग पोल हटाने या दूसरे उपायों पर चला मंथन

संवाददाता

रांची। सोसाइटी ऑफ जियो साइंटिस्ट, झारखंड ने रांची पहाड़ी पर अपनी भू-वैज्ञानिक रिपोर्ट बुधवार को उपायुक्त सह रांची पहाड़ी विकास समिति के अध्यक्ष राय महिमापत रे को सौंपी। सोसाइटी की एक नौ सदस्यीय समिति ने रांची पहाड़ी का भू-तात्विक अध्ययन किया था। जिसमें वर्ष 2004 से अभी तक के सभी गुगल मैप को दर्शाया गया है तथा सोसाइटी द्वारा सुझाव दिया गया है। उपायुक्त ने सोसाइटी द्वारा सौंपी गयी रिपोर्ट को देखा और सदस्यों से पहाड़ी पर लगावे गये

डीसी को रिपोर्ट सौंपते।

फ्लैग पोल को हटाने को लेकर चर्चा की। इसे कैसे हटाया जाए या कोई और उपाय है, इसके बारे में जानना चाहा। रिपोर्ट सौंपनेवालों में संरक्षक प्रो. उदय कुमार, अध्यक्ष एवी सहाय, उपाध्यक्ष एसएन सिन्हा, महासचिव अनल कुमार सिन्हा एवं सदस्य विकास तिर्की शामिल थे।

सोसाइटी द्वारा सौंपी गयी रिपोर्ट पर एक नजर

- ढाल के स्थिरीकरण के लिए आधुनिक तकनीक, मसलन जियोटेक्सटाइल, भूवस्त, जिसमें तेज गति से बढ़नेवाले पौधे तथा घास शामिल हैं, को अपनाना होगा।
- प्रस्तावित नये मंदिर परिसर तथा अस्थिर ढाल में पत्थरों को और नुकसान से बचाने के लिए सिविल इंजीनियरों के तरीकों को इस्तेमाल करना चाहिए।
- टूटे हुए पत्थरों के टुकड़ों को तार की जाली से तथा एंकरिंग द्वारा स्थिर किया जा सकता है।
- पुराने अथवा नये गार्डवाल को बाहर से लाये मिट्टी या बालू मिश्रित से भर देना चाहिए, जिससे पानी निकासी का प्रबंध हो।
- उत्तर व उत्तर पूर्व के ढलानों में तेजी से बढ़नेवाले घास, झाड़ी व पौधों को लगाने का काम तुरंत शुरू होना चाहिए।
- मंदिर या उसके आस-पास के क्षेत्रों में किसी भी प्रकार के सिविल कार्यों को करने के लिए विस्तृत भू-तकनीकी अध्ययन जरूरी है।
- रांची पहाड़ी के पत्थरों के प्रकार व उनकी गुणवत्ता को ध्यान में रखते हुए यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि इस पहाड़ी पर कोई बड़ा निर्माण कार्य को करना उचित नहीं प्रतीत होता है।